

स्वामिनि सींगार आयो (६)

यशोदा अमड़ि खे ज़ाओ अजु ब़ारु आ ।
नीलड़े कमल जियां शोभा अपारु आ ॥

मंगल मनाए हलूं अमड़ि अंडण में
मैया खे वाधायूं द्रियूं हली क्षण क्षण में
अमड़ि जे घरि आयो बृज जो आधार आ ॥१॥

शिव सनकादिक जंहिजो जसु ग़ाइनि
बृह्मा विष्णू भी जंहिखे ध्याइनि
उन गौलोक नाथ वतो अवतार आ ॥२॥
अमड़ि जी गोद में अजु शोभ्या जो धामु आ
जंहि में किलकारियूं द्रिये लाल घनश्याम आ
अमां बाबा भाग़नि जो भेनड़ी न पारु आ ॥३॥

लाल जो सलोनी मुखु द्रिसी नेण ठरनि था
जंहिजो मिठा नामु जपे टेई लोक तरनि था
उहोई आनन्द कन्द स्वामिनि सींगार आ ॥४॥

जै जै यशोदा बाल जै जै बृजचन्द जी
जै जै गोपाल लाल जै जै सुखकन्द जी
नभ धरणी अ में झझो जैकार आ ॥५॥

देवता गगन मां था गुल वरिसाइनि
विद्याधर गंधर्व गुण गीत गाइनि
सभु नर नारियुनि मुख वाधाई उचार आ ॥६॥

साई अडण अजु वाधाई थी गाइजे
लाइली लालन सां लगनि लगाइजे
इहोई जीवन जो सखी सचो सारु आ ॥७॥